International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 6 No. 18 March - April - 2025

भारतीय ज्ञान परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास का योगदान

प्रो. डॉ. संतोषकुमार गाजले
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
लो. बा. अने महिला महाविद्यालय, यवतमाल
Corresponding Author – प्रो. डॉ. संतोषकुमार गाजले
DOI - 10.5281/zenodo.15245270

हिंदुओं के आराध्य एवं हिन्दू संस्कृति के मुख्य आधार कहे जाते हैं राम मानवीय मूल्यों और सामाजिक सरोकारों से सराबोर है राम और उनका चरित्र मानवीय संवेदना, करुणा, दया, सहानुभूति आदि गुणों के प्रतीक और सबका हित चाहने वाले व्यक्तित्व के रूप में प्रसिद्ध है राम का आदर्श चरित्र हिंदी साहित्य की सगुण भक्ति धारा में काव्य रचना दो तरह की मिलती है- एक कृष्ण पर आधारित काव्य रचना दूसरी राम पर आधारित । राम पर आधारित काव्य रचना करने वाले कवियों ने राम को आराध्य मानकर उनके माध्यम से अपनी काव्य साधना का परिचय दिया । राम को विष्णु अवतार एवं दशरथ पुत्र के रूप में जाना जाता है, अतः राम भक्ति के रूप में वैष्णव भक्ति की पुनर्व्याख्या व उन्हें अपने समयोचित ठहराना मध्यकालीन रामकाव्य का उद्देश्य है । तुलसीदास इनमें सबसे अग्रणी लोकनायक, महात्मा व कवि हैं। उनकी राम पर लिखित रचनाएं सर्वप्रिय है। आज के वैश्विककरण के दौर में तो रामचरित मानस पर हजारों आलोचना पुस्तकें, शोध पत्र और शोध ग्रंथ लिखे जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त तुलसीकृत मानस हर एक तथाकथित महाराज, रामभक्त, पंडित पुरोहित के लिए रोजगार का जरिया भी बन रही है। रामकथा को सुनाकर लोगों से पैसा कमाने की नई चीज बाजारीकरण के इस दौर में शुरू हो गयी है। संस्कृत में रचित वाल्मीकि रामायण हिंदी राम साहित्य का आधार ग्रंथ है। इसी के आधार पर अधिकतर हिंदी कवियों ने अपने ग्रंथ रथे हैं। बाद में महाभारत व संस्कृत के कुछ अन्य ग्रंथों में भी राम कथा और राम के विषय में आख्यान मिलते है। हिंदी राम साहित्य से पहले संस्कृत, पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य में रामकाव्य लिखा गया है। दक्षिण के आलवार भक्तों ने भी राममक्ति के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राम का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली रहा है कि भारत की अधिकांश भाषाओं में रामभक्ति साहित्य की सृष्टि नजर आती है। वर्तमान में भी राम का व्यक्तित्व उसी तरह का है जिस तरह वह उस समय था, फर्क केवल इतना आया है कि व्यक्तित्व का प्रयोग अब अपने मन मुताबिक होने लगा है।

हिंदी में सबसे पहले चन्दबरदाई ने रामकथा का संक्षिप्त वर्णन अपनी रचना पृथ्वीराज रासो में किया है । लेकिन हिंदी साहित्य में रामकाव्य का पूर्ण विकास भक्तिकाल में हुआ । भक्तिकाल में भक्ति की अविरल धारा में राम साहित्य भरपूर मात्रा में रचा गया उत्तर भारत में रामानुज की शिष्य परंपरा में रामानंद के माध्यम से रामभक्ति साहित्य की लहर उठी । हिंदी के भक्तिकाल में राममक्ति साहित्य का उद्भव उन्हीं की लहर व अनुकरण से हुआ साहित्य को आदर्श मानकर कई कवियों ने काव्य ग्रंथों की सृष्टि की ।

रामानंद को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रामकाव्य परंपरा का पहला कवि स्वीकार किया है । इसके बाद हिंदी रामभक्ति साहित्य परंपरा में कवि

विष्णुदास आते हैं। जिन्होंने रामायण कथा (1442 ई) नामक ग्रंथ वाल्मीकि रामायण को आधार बनाकर लिखा है। तुलसीदास से पूर्व रामभक्त कवियों में ईश्वरदास और सूरदास नाम भी लिया जा सकता है जिन्होंने क्रमश: भरत मिलाप और अंगद पैज नामक दो काव्यों की रचना की है तथा कवि सूरदास ने सूरसागर के नवम स्कंध में राम कथा के प्रमुख प्रसंगों को अपने पदों का विषय बनाया गया है। हिंदी रामभक्त कवियों में अग्रदास, नागादास प्राणचंद चौहान, माधवदास, हृदयराम लालदास, नरहरि बारपट के नाम भी लिए जा सकते हैं। इन्होंने ने भी रामकथा पर बहुत कुछ लिखा है। रीतिकाल एवं आधुनिक काल में भी रामकाव्य परंपरा का पर्याप्त विकास हुआ है। केशवदास ने रामचंद्रिका जैसा सशक्त ग्रंथ लिखकर इस परंपरा को आगे बढ़ाया। इसी प्रकार आधुनिक काल में मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' जैसी प्रौढ रचना के द्वारा इस परंपरा को विकसित किया। ये सारी कृतियां रामकथा को विस्तार देने व राम साहित्य को अपनी समकालीन परिस्थितियों के अनुकूल बिठाना था। इस का उद्देश्य होता था राम को प्रासंगिक रूप में प्रस्तुत कर अपने समय का वर्णन करना आज भी रामसाहित्य की पुनः सृष्टि हो रही है। लेकिन साथ ही साथ रामसाहित्य के समक्ष जो चुनोतियाँ उमर रही हैं उनका चितन भी आवश्यक है।

रामकाव्य परंपरा के सर्वप्रमुख व सशक्त कवि है गोस्वामी तुलसीदास। इनका अधिकांश काव्य रामकथा पर आधारित व लिखित है। इनके रामकथा पर लिखे ग्रंथों में रामचरितमानस, हिंदी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है इसी महाकाव्य को आधार बनाकर आज के वैश्विककरण रूपी दौर में राम का प्रयोग वस्तु रूप में हो रहा है। गांव से लेकर शहरों तक रामकथा पर आये दिन कराए जाने वाले कार्यक्रमों का उद्देश्य ये नहीं होता कि राम के आदर्श चरित्र का बखान किया जाए। बल्कि यह इस लिए जाता ताकि राम को वस्तु की तरह प्रयोग में लाकर उससे धन कमाया जा सके। इस ग्रन्थ के अलावा विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली दोहावली, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, रामाज्ञा प्रश्न आदि ग्रंथों की रचना की है। इन्हीं को आधार बनाकर वर्तमान समय में यज्ञ कथाएं महोत्सव आदि बड़े बड़े कार्य कराए जाते हैं और उनमें तुलसीकृत रामकथा का पाठ किया जाता है विश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के इस दौर में राम का चरित्र और तुलसीदास द्वारा रचित राम साहित्य का गलत प्रयोग कई दृष्टियों से तथाकथित बाबाओं, पंडे-पुजारियों, और भ्रष्ट पाखंडी व्यक्ति कर रहे हैं, ताकि उससे धन बटोरा जा सके। आज व्यक्ति आत्मकेंद्रित और अर्थकेन्द्रित हो गया है। मानवीय संवेदना उनके लिए कोई मायने नहीं रखती है। तुलसी की कृतियों और राम का व्यक्तित्व वैश्विककरण के इस दौर में केवल अर्थकेन्द्रित हो चला है। इनका उपयोग केवल और केवल धन कमाने के लिए लगातार किया जा रहा है। भक्तिकाल के सबसे बड़े रामभक्त के रूप में माने जाते हैं कवि तुलसीदास इन्हें कवि महात्मा, लोकनायक, समन्वयवादी व सन्त आदि कई अन्य उपाधियों प्रदान की गयी है उनका सम्पूर्ण काव्य राम के इर्द गिर्द घूमता है व उन्ही पर केंद्रित है। क्योंकि राम ही उनके एक ऐसे चरित्र है जिनमें मानवीय मूल्यों का संचार सुगठित है। राम को ही तुलसी सबकुछ मानते हैं वही उनके लिए जीवन के आधार है। तुलसी के नाम के साथ राम का नाम जुड़ा है और राम तुलसी के जीवन से तुलसीदास के कुल 12 ग्रंथ है जिनको अधिकतर विद्वान प्रामाणिक मानते है जिनमें छः छोटे और छः बडे ग्रंथ हैं। सभी ग्रंथ राम को आधार बनाकर लिखे गए हैं जिनकी हिंदी साहित्य एवं हिंदी राम साहित्य दोनों में अपना महत्वपूर्ण व उच्च स्थान है इनकी रचनाओं में रामचरितमानस, कवितावली, विनयपत्रिका, गीतावली तो उनकी उच्च कोटि की रचनाएं है जिनमें रामचरितमानस का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। इनके अलावा उनकी अन्य रचनाएं रामलला नहछू बरवै रामायण, दोहावली. रामाज्ञा प्रश्नावली, जानकीमंगल, हनुमन्नबाहुक आदि भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। सभी रचनाएं वैश्वीकरण के परिवेश में अपना मूल अस्तित्व खोती हुई नजर आ रही है विद्वानों द्वारा समय समय कराई जा संगोष्ठियों में इनकी और ध्यान

आकर्षित करवाया जाता है बाजारीकरण के दौर में राम का बदलता स्वरूप और राम साहिला के सामने क्या चुनोतियों आ रही है उनपर भी बहुत कुछ विचार विमर्श किया जाता है। यदि बात करें उनके प्रसिद्ध ग्रंथ मानस की तो 'रामचरितमानस के सौंदर्य के द्वारा तुलसीदास जी ने जनता को लोकधर्म की ओर जो आकर्षित किया है वह निष्फल नहीं हुआ है 11 उन्होंने तो लोकधर्म निमाया लेकिन आज उनके लोकधर्मी साहित्य का उपयोग आज मात्र पैसा ऐंठने के लिए किए जा रहा है। रामकथा का आयोजन मात्र आज लोगों को भटकाकर पैसा कमाने का जरिया बन चुका है। गलियों, शहरों के चौराहों पर लगे पोस्टर जिनपर लिखा होता है फला तारीख को रामकथा का पाठ करेंगे फलां श्री श्री महाराज। इस कार्यक्रम में बड़ी बड़ी चडतल चढ़ती है और लोगों द्वारा राम के नाम पर चढ़ाई जाती है। वर्तमान के वैश्विककरण के दौर में जहां गरीब लोग सड़कों पर भीख मांगते है, अपाहिज को देने के लिए लोगों के पास एक रुपया नहीं होता लेकिन राम, कृष्ण या और किसी देवी-देवता के नाम पर पाखंडी लोगों के सामने लाखों अरबों की रकम चढ़ाई जाती है और उसे आस्था का नाम दिया जाता जबकि सोचने वाली बात है मानवीय संवेदना को दरकिनार करके हम कौन से ईश्वर को खुश कर देंगे। जो राम मानवीयता के लिए अपनी सीता की परवाह न करके उनपर परीक्षा जैसा इतना बड़ा कहर ढाह बैठे ऐसे जनमानव को आज गलियों में, चौराहों पर बाजार के समान की तरह क्यों बेचा जा रहा? राम आज बाजार का एक साधन बन चुका है जिसे जब चाहे कोई भी इस्तेमाल करके पैसा कमा सकता है। इसके स्पष्ट उदाहरण पी के और ओह माय गॉड जैसी फिल्में है। क्योंकि जब ऐसी फिल्मों में राम, कृष्ण आदि देवी-देवताओं को जब बाजार की सामग्री के रूप में प्रदर्शित करते हुए दिखाया जो आज वैश्विककरण के दौर की मुख्य घटना है तो धार्मिक पाखण्डियों की भावनाएं आहत हो गई। उन्हें लगा जैसे उनका रोजगार उनसे छीनने का प्रयास किया जा रहा है और उन्होंने ऐसी फिल्मों पर प्रतिबंध लगाने के लिए धार्मिक उन्माद फैलाने जैसा घिनोना कार्य किया।

वर्तमान वैश्विककरण, बाजारीकरण और अर्थकेन्द्रित वातावरण में तुलसी कृत रामकथाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं लेकिन उनके साथ ही साथ उनका जो उपयोग गलत हो रहा उसको बचाने का भी प्रयास हमें करना होगा | आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तुलसी के व्यक्तित्व एवं महत्व के सम्बंध में लिखते हैं 'तुलसी का महत्व बताने के लिए विद्वानों ने अनेक प्रकार की उक्तियों का सहारा लिया है। नाभादास ने इन्हें कलिकाल का वाल्मीकि कहा था, स्मिथ ने उन्हें मुगलकाल का सबसे बड़ा व्यक्ति माना था। ग्रियर्सन ने इन्हें बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोकनायक कहा था और यह तो बहुत से लोगों ने बार-बार कहा है कि रामायण भारत की बाइबिल है। इन सारी उक्तियों का तात्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि, लोकनायक व महात्मा थे। 2 तुलसीदास के विषय में कहा गया उपर्युक्त कथन बिल्कुल सही है वर्तमान समय में तुलसी पर कई लेखक अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। उनपर कई आलोचकों ने ग्रंथ लिखे हैं, शोधार्थियों ने शोध ग्रंथ व शोध पत्र लिखे हैं इसी से तुलसी की महत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है। तुलसी साहित्य की प्रासंगिकता, तुलसी साहित्य में समन्यय भावना, तुलसी साहित्य में सामाजिक चेतना, तुलसी के रामचरितमानस में लोक भावना आदि कई विषयों पर लेखक लगातार लिख रहे है और बहुत से शोध छात्र शोध कार्य अभी भी कई विश्वविद्यालयों में कर रहे हैं जिससे स्पष्ट है कि तुलसीदास एक शक्तिशाली व असाधारण कवि हैं और रहेंगे। लेकिन आज वैश्विककरण के इस दौर में हमें ये सोचना है कि इस लोकनायक कवि के राम को किस तरह संजो कर रखा जाए ताकि वह बाजार की वस्तु न बन पाए। साथ ही साथ तुलसीकृत रामकथा केवल अर्थ की दृष्टि ने देखी जाए। इसको मानवीयता के लिए दर्शाया व सुनाया जाए ताकि राम जैसा सभी का बने, ऐसा प्रयास किया जाए।[1]

तुलसीदास के महत्व को प्रतिपादित करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं- 'गोस्वामी के प्रादुर्भाव को हिंदी काव्य के क्षेत्र में एक चमत्कार समझना चाहिए। हिंदी काव्य की शक्ति का पूर्व प्रसार इनकी रचनाओं में पहले-पहल दिखाई पड़ता है। भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि यदि किसी को कह सकते हैं तो तुलसीदास को ।"3 इस प्रतिनिधि कवि ने जो हमें बहुमूल्य साहित्य दिया है और राम का जो स्वरूप निर्मित किया है उसे वैश्विककरण के इस दौर ने धुंधला कर दिया है। बहुत से कथा समागमों में रामकथा का गलत उच्चारण किया जाता है पदों को अलग तरह से अपने मन मुताबिक प्रस्तुत किया जाता है। ऐसे में चिंतन का विषय है कि हम इसे किस तरह सुरक्षित रखें इस बात से कतई इनकार नहीं किया जा सकता कि भक्तिकाल में ही नहीं बल्कि पूरे हिंदी साहित्य में हिंदी राम काव्य को श्रेष्ठ व एक दिशा देने वाले एकमात्र कवि तुलसीदास ही हैं। हिंदी रामकाव्य का अस्तित्व उनसे अलग करके देखा ही नहीं जा सकता । इसलिए वैश्विककरण के दौर में तुलसी के राम के सामने जो चुनोतियों हैं उनको हमें समझना चाहिए और उन्हें दूर करने के लिए अपना कदम मजबूत करना चाहिए। हिंदी रामकाव्य के आधार कवि तुलसी व आचार ग्रंथ रामचरितमानस ही है। मानस को भी हमें संजो कर रखने की आवश्यकता आज है। मानस के राम को एक आदर्श चरित्र एवं मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वैश्विककरण ने उनके इस रूप को खंडित कर उन्हें वस्तु बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए आदर्श व्यवहार की कसौटी राम का चरित्र है और मानस मानव व्यवहार का दर्पण । हमें इस दर्पण और चरित्र को वैसा ही बनाये रखना है ताकि आने वाली पीढ़ी भी इनसे प्रेरणा ग्रहण कर सके । रामचरितमानस तुलसी की अक्षय कीर्ति का आधार है जिसे हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण धरोहर माना गया है। लेकिन इस धरोहर का हनन करने का प्रयास भी भरपूर जारी है। विश्व बाजार जब से गांव में तब्दील हुआ उसे इस बात का भी पता चला है कि राम और तुलसीदास दोनों भारतीय जनमानस पर मानस का बहुत गहरा प्रभाव है तभी तो आज भी तुलसी पर बहुत कुछ लगातार लिखा जा रहा है। तुलसी रचित रामचरितमानस कई दृष्टियों से प्रासंगिक है। मानव की सभी भूमिकाओं में राम अपने अधिकार के साथ ही मानवाधिकार की रक्षा करते दिखते हैं। तभी तो वे मानव समाज के आदर्श बन गए हैं । तुलसी का लोकचिन्तन, तुलसी के राम, रामचरितमानस की प्रासंगिकता, मानस का पुनर्पाठ जैसे कई विषयों पर शोध किये व शोध प्रबंध एवं शोध पत्र लिखे गए और लिखे जा रहे हैं जो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि तुलसी व उनके राम का वजूद तब भी बहुत महत्व रखता था और आज भी । हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा है मानव प्रकृति का ज्ञान तुलसीदास से अधिक उस युग में किसी को नहीं था.

निष्कर्षतः

कहा जा सकता है कि रामभक्ति धारा के अनेक कवि हिंदी साहित्य में हुए लेकिन राम साहित्य का महत्व अकेले तुलसीदास के कारण ही सम्भव हो सका । तुलसी की समन्वय, भक्ति व लोक संग्रह की भावना, उनका जनमानस व लोक चिंतन, आदर्श पात्रों की सर्जना ने उन्हें हिंदी राम साहित्य में अमर बना दिया है। सच कहा जाए तो हिंदी राम साहित्य तुलसी के नाम से जाता है और आगे भी जाना जाएगा । लेकिन आज तुलसी के राम और उनके साहित्य के समक्ष बाजार ने जो खतरे पैदा किये हैं उनसे निपटना एक चुनौती है राम का स्वरूप वैश्विककरण के परिपेक्ष्य में बदलता नजर आ रहा है उसे बचाने की आवश्यकता है। रामसाहित्य की इन चुनौतियों को मध्यनजर रखते हुए बहुत से देशी व विदेशी विद्वान हर वर्ष कई विभागीय, राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय और वैश्विक संगोष्ठियां, सेमिनार व सम्मेलन करवाते हैं। जिनका उद्देश्य यही होता है कि एक तो राम साहित्य का विस्तार व उसके महत्व को दर्शाया जाए साथ ही साथ रामसाहित्य के समक्ष उमरती नयी चुनौतियों की तरफ विद्वतजन का ध्यान आकर्षित कराया जाए। इसलिए हम सब को चिंतन करना चाहिए

कि वैश्वीकरण के इस दौर में तुलसी के राम को किस प्रकार बाजार से मुक्त कराकर लोगों के दिलों व चरित्र का हिस्सा बनाया जाए।

संदर्भ:

1. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में संत साहित्य की प्रासंगिकता, पृष्ठ संख्या
2. हिंदी साहित्य. युग और प्रवृत्तियां, डॉ. शिवकुमार शर्मा, पृष्ठ संख्या 142, 2009
3. प्रतियोगिता साहित्य, डॉ. अशोक तिवारी, पृष्ठ संख्या 130
4. विमल विमर्श पत्रिका, अंक 1, भाग 2, वर्ष 2016, पृष्ठ संख्या 44
5. चिंतन की अर्थवत्ता, रज्जव त्रिवेदी, पृष्ठ संख्या